IMPACT FACTOR
6.10

ISSN 2229-4406

UGC Approved International Registered & Recognized
Research Journal Related to Higher Education for all Subjects

UNIVERSAL RESEARCH ANALYSIS

URA

UGC APPROVED & PEER REVIEWED RESEARCH JOURNAL

Issue - XIX, Vol. V
Year - X (Half Yearly)
Sept. 2019 To Feb. 2020

Editorial Office :
'Gyandev-Parvati',
R-9/139/6-A-1,
Near Vishal School,
LIC Colony,
Pragati Nagar, Latur
Dist. Latur - 413531.
(Maharashtra), India.

Contact : 02382 -241913
9423346913 / 9503814000
9637935252 / 7276301000

Website
www.irasg.com

E-mail :
interlinkresearch@rediffmail.com
visiongroup1994@gmail.com
mbkamble2010@gmail.com

Publisher :
Jyotichandra Publication
Latur, Dist. Latur - 413531. (MS)

Price : ₹ 200/-

CHIEF EDITOR

Dr. Balaji G. Kamble
Professor & Head, Dept. of Economics,
Dr. Babasaheb Ambedkar Mahavidyalaya,
Latur, Dist. Latur(M.S.)India.

EXECUTIVE EDITORS

Dr. Rajendra R. Gavhale
Head, Dept. of Economics,
G. S. Mahavidyalaya,
Khamgaon, Dist. Buldhana

Dr. D. Raja Reddy
Chairman, International Neuro Surjery Association,
Banjara Hill, Hayderabad (A.P.)

Dr. E. Siva Nagi Reddy
Director, National Institue of Hospitality & Tourism Management,
Hyderabad (A.P.)

Dr. A. H. Jamadar
Chairman, BOS Hindi,SRTMUN & Head, Dept. of Hindi, BKD College,Chakur, Dist. Latur (M.S.)

Dr. Yu Takamine
Professor, Fafulty of Law & Letters,
University of Ryukyas,
Okinawa, (Japan).

Dr. Shaikh Moinoddin G.
Dept. of Commerce,
Lal Bahadur Shastri College,
Dharmabad, Dist. Nanded(M. S.)

Prashant Kshirsagar
Dept. of Marathi,
Vasant Mahavidyalaya
Kaij, Dist. Beed (M.S.)

Scott A. Venezia
Director, School of Business,
Ensenada Campus,
California, (U.S.A.)

DEPUTY-EDITOR

Dr. N. G. Mali
Head, Dept. of Geography,
M. B. College,
Latur,Dist. Latur.(M.S.)

Dr. Babasaheb M. Gore
Principal,
Smt. S.D.D.M.College
Latur, Dist. Latur (M.S.)

CO-EDITORS

Dr. V.J. Vilegave
Head, Dept. of P.A.,
Shri. Guru Buddhiswami College,
Purna, Dist. Parbhani (M.S.)

Dr. Omshiva V. Ligade
Head, Dept. of History
Shivjagruti College, Nalegaon,
Dist. Latur. (M.S.)

Dr. S.B. Wadekar
Dept. of Dairy Science,
Adarsh College,
Hingoli, Dist. Hingoli.(M.S.)

Dr. Shivanand M. Giri
Dept. of Marathi,
Bhai Kishanrao Deshmukh College,
Chakur Dist. Latur.(M.S.)

Issue : XIX, Vol. V
UNIVERSAL RESEARCH ANALYSIS
IMPACT FACTOR 6.10
ISSN2229-4406
Sept. 2019 To Feb. 2020

INDEX

Sr. No.	Title of Research Paper	Author	Page No.
1	Synthesis of Biological Study of Some New Nitrogen and Oxygen Five Member Hetracyclic Compounds	P. M. Band	1-6
2	Impact of Globalization on the Indian Culture	Dr. K. M. Gayatridevi	7-10
3	The Role of Male Social Reformers In Woman Empowerment	Dr. Smita S. Patil	11-15
4	Water Management of Osmanabad District	B. B. Jatte, B. R. Shinde	16-20
5	Shri Swamiji In Spiritual Field [The Historical Study of Savadatti Taluka Inchal Math And its Branches] (From 18th Centuary to 21 Centuary)	Dr. Indumathi Patil, B.K. Bhagirati	21-25
6	Female Feoticide In India: Complexity of Re-Constructing Approaches And Behaviour	Ujjwala Sakhalkar	26-31
7	Retail Banking	Abhinav Jog, Sachin Napate	32-38
8	Diversity of Phytoplanktons In Masalga Tank, Dist Latur, Maharashtra	R.R. Jadhav, M. G. Babare	39-41
9	स्वातंत्र्योत्तर कालीन हिंदी उपन्यास में संघर्ष चेतना	डॉ. अल्लाबक्श एच. जमादार	42-47
10	अमृतलाल नागर के उपन्यासों में मानवीय मूल्य	डॉ. महावीर रामजी हाके	48-52

10

अमृतलाल नागर के उपन्यासों में मानवीय मूल्य

डॉ. महावीर रामजी हाके
हिंदी विभाग,
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,
गंगाखेड, जि. परभणी

Research Paper - Hindi

मूल्य मानव जीवन का एक मूल है। मूल्यों के अभाव में हम प्राणी तो कहला सकते है पर मानव नहीं। मानव का नाम मूल्योंपर ही निर्भर है। मानव की प्रतिष्ठा का आधार जीवन-मूल्य ही होता है। हम आज तो कुछ है उनमें मूल्यो की अहम भूमिका है। यदि मूल्य निरपेक्ष होकर हम अपने आपको देखे तो आदिम स्थिति में ही पायेंगे । इस प्रकार हमारे सामने दो पक्ष स्पष्ट है एक मानव दूसरा मूल्य। मूल्य अपने आप में कुछ भी नही है, वे मानव के साथ जुडकर ही मूल्यवान होते है। मानव और मूल्य में मानव का स्थान महत्वपूर्ण है, क्योंकि वह मूल्यों की स्थापना और उनका निर्वाह करता है, पर इससे मूल्यों की मूल्यवता में कोई कमी नही आती।

अमृतलाल नागरजीने अपने उपन्यासों में इन्ही मानवीय मूल्यों को प्रतिष्ठित कर मानव संस्कृति के प्रति अपने दायित्व का निर्वाह किया है।

१) आस्था और जिजीविषा :-

नागरजी के उपन्यासो में आस्था और जिजीविषा का स्वर मुखरित हुआ है। वे आस्था के सर्जक तथा जिजीविषा के वितरक रहे है। उनके चिंतन का चक्र कही भी घुमता रहा हो, कैसी भी समस्याओं का सामना करता रहा हो, वे आस्था के सर्जक तथा जिजीविषा के वितरक रहे है। उनके चिंतन का चक्र कही भी घुमता रहा हो, कैसी भी समस्याओं का सामना करता रहा हो, वे आस्था के मार्ग से कभी विचलित नहीं हुए। नागरजी ने भी अपने उपन्यासों को आस्था और जिजीविषा के आलोक से आलोकित कर मानव जीवन को आत्मधाम बनाया है। क्योंकि चातुर्दिक

निराशा और अनास्था के परिवेश में आस्था और जिजीविषा ही मानव हित के लिए व्यक्ति को प्रेरित करती है ।

'महाकाल' उपन्यास में पाँचू अपने घर की अकाल के कारण हुई भयानक स्थिति को देखकर घर से पलायन कर जाता है परंतु रास्ते में नवजात शिशु की रक्षा-कामना उसे मानवीय प्रेम और कर्तव्य से बाँध लेती है, और उसमें जीवन के प्रति आस्था उत्पन्न करती है । वह अपने घर लौट आता है और अपनी पत्नी मंगला को बडे धैर्य से कहता है "जो होना था वह हो गया । अब इसे संभालो । इसे बचाओ । इसे बचाने के लिए हम-तुम जिएंगे ।"१ यहाँ नागर जीने दिखाया है कि जीवन की विषय परिस्थितियों से निराश युवक में जीवन के प्रति आस्था आशा का संचार करती है, "अविश्वास के वातावरण में जीवन के प्रति विश्वास की इस दृढता ने पति और पत्नी, दोनों को ही, अपूर्व धैर्य और बल दिया । स्वयं पाँच को भी अपनी इस बातद्वारा अपने अंदर की अदमनीय, चिर विजयी, विकासमयी शक्ति का परिचय मिला । प्रलय में सृष्टि के बीजांकुकर फुटने लगे ।"२ जीवन के प्रति वही आस्था पति-पत्नी दोनो में मानव जीवन के प्रति प्रेम और ममत्व भाव को जागृत कर देती है ।

'अमृत और विषय" उपन्यास में अरविंद शंकर की षष्ठिपूर्ति के अवसर पर नगर के साहित्यिक तथा राजनैतिक नेताओं द्वारा अभिनंदन समारोह का आयोजन किया जाता है । इस अवसर पर आयोजन से प्रसन्न होने की अपेक्षा खिन्न अधिक होता है और सामाजिक एवं राष्ट्रीय व्यवस्था के खोखलेपन को मन धिकारता है । साथ ही वह अपने पारिवारिक जीवन के अभावाओं और कष्टों को मन में लाकर व्यथा से भर उठता है । धनाभाव, पुत्रों की उच्छृंखलना और लेखक के प्रति समाज की अवमानना की बातें उसे कुंठित कर देती है । छोटे बेटे उमेश का घर छोडकर जाना, आत्महत्या करना उसे पुन: कुंठित कर देता है । "क्या मेरा अन्तरिक जीवन इतना कुंठित नही? क्यो न पिता की लीक पर चलकर मैं भी संखिया या अन्य कोई विषय खा लूँ । यह झूठा आशावाद, यह नवजीवन की प्रतीक्षा अब कब तक करूँ ? सारा जीवन यों ही मन बहलाने - बहलाने बीत गया ।"३ इस प्रकार की विषताओं को भोगते हुए वह जीवन से दूर भागने का प्रयास करता है । लेकिन अचानक आस्था की भूमि पर आ जाता है ।

२) स्वतंत्रता और दायित्व बोध :-

स्वतंत्रता का अर्थ है कि व्यक्ति अपने व्यक्तित्व में अन्तर्निहित मानवीयता का समस्त संस्कारों से मुक्त होकर अर्थवान करता है, क्योंकि उसका व्यक्ति समस्त सामाजिक व्यक्तित्वोंकी समष्टि में ही गतिशील है, इस स्वतंत्रता के अंतर्गत अन्य सभी व्यक्तियों के स्वातंत्र्य का भाव समन्वित है ।

स्वतंत्र होने का अर्थ यह नहीं है कि मनुष्य को केवल भोजन और कपडा मिल जाए इसके

अतिरिक्त उसके मानस में जो अंधरुढियाँ, कुंठाएँ, अविवेक, मुर्च्छता, मृत परम्पराएँ आदि प्रवृत्तियाँ है। "जिनके कारण वह युग युग से दास बनता चला आया है, उनसे भी मुक्त कराना है। इस दृष्टि से स्वातंत्र्य न केवल एक बाह्य परिस्थिति है, वरन एक आन्तरिक मूल्य भी है।"४

मानववादी लेखक नियतिवादी तथा निर्णयवादी दृष्टिकोणों को वे चाहे विज्ञान के नाम पर ही स्थपित किये गए हो, अमान्य करते हुए मानवीय स्वतंत्रता की उदघोषणा करता है। नागर जी के उपन्यासों के अनेक पात्र जैसे कन्या, निर्गुणिया, सीता, सूरदास, तुलसीदास, बाबा राम जी, सज्जन, देश दीपक आदि अपनी स्वतंत्र चेतना के फलस्वरुप ही व्यष्टि से समष्टि की ओर अग्रेसर होते है। लोक मानस को अन्धरुढियों, कुंठाओ, मृत परंपराओं से मुक्त कर लोक कल्याण ही जिनके जीवन का लक्ष्य बन जाता है।

'अमृत और विष' उपन्यास में नागरजीने व्यक्ति को समाज की रुढियों से विद्रोह करते दिखा मानवीय स्वतंत्रता का आवाहन किया है, क्योंकि जब तक वह अपने इन संस्कारों से मुक्त हो उसका विरोध नही करता तब तक वह स्वतंत्रता का वरण नहीं कर सकता। इस उपन्यास की पात्र रानी एक आधुनिक विचारोंवाली युवती है, जो सामाजिक रुढियों का विरोध कर अपनी स्वतंत्रता के अधिकार के प्रति जागरुक है। "मैं सी.टी. करके तो आजाद हो जाउँगी। उधर वो भी एम.ए. कर लेंगे। हमें तब कौन रोक सकता है? अब तो कितने ही प्रेम विवाह होने लगे, विधवा विवाह भी होने लगे। नाम को व्याह हुआ था मेरा। जब तो उस पति को सूरत भी याद नहीं आती।"५ नारी अब पुरानी जर्जर मान्यताओं को मानकर अपना जीवन नरक नहीं बनाना चाहती। वह आर्थिक रुप से स्वतंत्र जीना चाहती है।

३) विवेक और आचरण :

संयुक्त जीवन दृष्टि को ही मूल्य कहते है। मुल्यों का उदय मानवों द्वारा मानव जीवन में से मानव जीवन के लिए होता है। सभी आधुनिक दर्शनों और विचारधाराओं ने मानव में ही सर्वोपरी सत्ता के रूप में विश्वास प्रकट किया है। बदलती परिस्थितियों में मूल्यों के विघटन, परिवर्तन, उनकी ग्राह्यता और खरेपन का निर्धारक और एक मात्र विश्वसनीय आधार मानव विवेक ही है। "विवेक मानव के भौतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक भावों तथा विचारों की अंतसंगति का ही दूसरा नाम है। हम उसे आत्मोपलब्धि का पर्याय भी कह सकते है।"६ यह ही मनुष्य को पशु से विलग करता है। यह ही मनुष्य को पशु से विलग करता है। इसलिए जो वास्तव में मनुष्य है, उसके पास विवेक है, वह विचारशील है। वे समस्त सिद्धांत जो मानव नियति को पूर्व निर्धारित मानते हैं, वे मनुष्य से विकल्प की स्वतंत्रता और संकल्प की गरिमा छीन लेते हैं। क्यों फिर मनुष्य के अपने निर्णय को कोई महत्व नही रह जाता, अपने विवेक की कोई सार्थकता नही रह जाती। मनुष्य अपनी अंतरात्मा से निर्देशित होकर अपने विवेकपूर्ण आचरण द्वारा जिस अंश तक उस नियति का

ाएँ आदि प्रवृत्तियाँ
ाना है। इस दृष्टि
।"४
ज्ञान के नाम पर
ा है। नागर जी
बाबा राम जी,
की ओर अग्रेसर
त्याण ही जिनके

ो विद्रोह करते
कारों से मुक्त
उपन्यास की
र कर अपनी
ी। उधर वो
लगे, विधवा
द नहीं आती
ाहती। वह

न जीवन में
ही सर्वोपरी
परिवर्तन,
क ही है।
ते का ही
ो पशु से
है, उसके
त मानते
नुष्य के
। मनुष्य
गति का

साक्षात्कार करता है, उसी अंश तक मानव नियति वास्तविक होती है। विवेक वास्तव में अतनिर्हित एकता का संकल्प है। मानवीय सदगुणों का समुचित विकास, भावनाओंका विकास, भावनाओं का उपयुक्त नियमन तथा उत्कर्ष का मूलाधार विवेक मानव की वह बौद्धिक शक्ति है, जिसके द्वारा मानव से सृष्टि में अन्यान्य प्राणियों से भिन्नता ग्रहण करते हुए सर्वोत्कृष्ट स्थान प्राप्त किया है। विवेक के माध्यम से वह सत असत तथा उचित अनुचित में अंतर कर व्यष्टिगत व समष्टिगत दोनों ही क्षेत्रो में जीवन का औचित्य सिद्ध करता है। अत: विवेक मानवीय चेतना का मूलाधार है। "जिस व्यक्ति में विवेक जितना अधिकार जागृत होगा, वह उतना ही सफल मानव होगा और जिना अधिक वह उसे अपने जीवन में चरितार्थ कर सकेगा, उतना ही महान होगा।"[७] क्योंकि जीवन में विवेक नामक मूल्य को स्वतंत्र रखने से जीवन की कई उपलब्धियाँ खुल जाती है, नए अर्धबोध होने लगते है तथा जीवन के विभिन्न आयाम उद्‌भूत होने लगते है।

४) नैतिकता :

नैतिकता समस्त मानववादी चिंतन का धारक मूल्य है, "जो आदमी आदमी के बीच शुभ संबंधों का साधन बनती है।"[८] नैतिकता सामाजिक एवं वैयक्तिक निर्णयशक्ति है अथवा भले बुरे का मानदण्ड है। समाज के काम विषयक मानदंड तथा व्यक्ति के काम विषयक मानदण्ड एक दूसरे पर अन्योन्य प्रभाव डालते है और इसमें से किसी एक में जो परिवर्तन होता है वह प्राय: दूसरे में परिवर्तन लाता है। नियंत्रित नियंत्रण यौन संबंधो का समर्थन प्राय: सभी प्रकार के समाजों में मिलता है। क्योंकि नियंत्रित काम से ही व्यक्ति, परिवार तथा समाज का भला हो सकता है। काम का नियमन केवल विवाहद्वारा या दाम्पत्य में सम्भव है। उपन्यास साहित्य का सबसे बडा विषय नैतिकता का प्रश्न ही रहा है। चाहे उसके विवेचन की पद्धति आलोचनात्मक हो या आदर्शवादी। मानववाद आदर्श समाज की कल्पना करता हे, इसलिए संबंधो को भी आदर्शवादी धरातल पर ही देखता है। पति-पत्नी संबंधों के प्रति मानववाद की आस्था है, क्योंकि वे परस्पर एक दूसरे को ठीक रास्ते पर लाते है, एक दूसरे की सहायता करते है। नागरजीने भी अपने उपन्यासो में पति-पत्नी संबंधो को महत्व दिया है। क्योंकि भारतीय समाज में जिस तेजी से नैतिकता का पतन हो रहा है, उसकी ओर उन्होंने संकेत दिए है, जैसे मास्टर जगदम्बा का अपने भतीजे की विधवा से अवैध संबंध, कन्या की माँ और ताई में सौत का रिश्ता, नेताओं के चारित्रिक पतन का भी नागरजीने उल्लेख किया है, "ये वालें टियर दिन में स्त्रियों को सबके सामने बहिन जी कहते है और एकांत पाने ही पती पत्नी बन जात है।"[९]

नागरजी की मान्यता है कि आदर्श समाज की सथापना तभी संभव हो सकती है जब पति-पत्नी पूर्ण रुप से एक दूसरे के प्रति एकनिष्ठ होंगे। नैतिकता के संदर्भ में मानववाद पति-पत्नी संबंधो को मान्यता देता है, क्योंकि वह एक आदर्श समाज की स्थापना करना चाहता है। यह नैतिकता

व्यक्ति की आन्तरिक है, बाह्य नहीं ।

५) संस्कृति :

मनुष्य द्वारा इस समाज से ग्रहण किए रीति रिवाज, धर्म, ज्ञान, विश्वास, दर्शन आदि का समुच्चय ही संस्कृति है । संस्कृति का संबंध मानव की अंतर्मुखी दशा से है । जिस कर्म एव भाव से मनुष्य के संस्कार सुंदर बनें जिससे कृति का सौंदर्य तथा दिव्यता अधिक स्पष्टता से प्रकट हो सके । जो भी कार्य कृति या कार्य उसे स्वार्थहीन करें, अहंकार शून्य करें, उदार बनाए और साथ ही सृजन में विकास में सहायक हो, वही मानव संस्कृति का आधार है । मनुष्य की सार्थकता के संदर्भ में संस्कृति को परिभाषित करते हुए देवराज कहते है कि, "संस्कृति उन समस्त क्रियाओं को कहते है जिनके द्वारा मनुष्य अपने को विश्व की निरुपयोगी किंतु अर्थवती छवियों से फिर वे छवियाँ चाहे प्रत्यक्ष हों अथवा कल्पित, संबंधित करता है ।"[१०]

इससे स्पष्ट है कि मनुष्य की वर्तमान चिंतन प्रक्रिया में संस्कृति की भूमिक अत्यंत महत्वपूर्ण है । यह किसी प्रकार के रुढ रुपों की बंद पद्धती नही है । पहले स्तर पर संस्कृति मानवीय अनुभव में विश्वव्यापी है, फिर भी उसकी प्रत्येक स्थानीय या क्षेत्रीय अभिव्यक्ति विशिष्ट होती है । दूसरे स्तर पर संस्कृति स्थायित्व रखती है, फिर भी उसमें लगातार परिवर्तन लक्षित होते है । तीसरे स्तर पर संस्कृति हमारी जीवनधारा को परिपूर्ण करती है और बहुत सीमा तक निश्चित भी करती है, फिर भी वह हमारे चेतन विचारों पर यदा कदा ही आरोपित होती है । निष्कर्ष के रुप में कहा जा सकता है कि सांस्कृतिक क्षेत्र में भी नागरजी के उपन्यास मानववाद की प्रतिष्ठा करते है ।

संदर्भ संकेत

१) महाकाल - अमृतलाल नागर पृ. २५०
२) वही पृ. २५०
३) हिंदी उपन्यास बदलते संदर्भ - शशिभूषण पृ. १५१
४) मानव मूल्य और साहित्य - धर्मवीर भारती पृ. ४२-४३
५) अमृत और विष - अमृतलाल नागर पृ. ११४
६) कहानीकार अज्ञेय और मानव मूल्य - राजेश कुमार पृ. १३
७) विश्वज्योति मानवता अंक पृ. ५२
८) सामाजिक एवं मानववादी विचारक - डी.आर. जाटव पृ. २२३
९) नाच्यौ बहुत गोपाल - अमृतलाल नागर पृ. १७१
१०) सांस्कृतिका, दार्शनिक विवेचन - देवराज पृ. १६६

URA U

Membership No.:
(For office use only)

NAME (For Individual)
NAME OF ORGANIZ
FULL ADDRESS : _
DISTRICT
Tel. No. (Res.) :
E-mailAddress:
MEMBERSHIP PER
D.D.No. /M.O. No. _
In Cash
Date :

NOTE:
1. Research Paper M
2. For remittances, p
'Gyandeo-Parvati', L
Latur - 413531 (M.S
Post.
Membership for one
1) Individual :- Rs. 4
2) Institutions :- Rs.
*Single copy for R
*Subscription rates
*Extra postage cha

Sow. Mahan
R-9/139/6-A-
(Maharashtra)

Webside:-